# अनुक्रमणिका

# अ नु क्र म णि का

**प्राक्कथन**

**अनुक्रमणिका**

**प्रथम अध्याय - ''उपन्यासकार 'संजीव' तथा 'रवींद्र ठाकुर' : तुलनात्मक विवेचन'' 1 - 17**

प्रास्ताविक

1.1 संजीव : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.1.1 माता, पिता, परिवार

1.1.2 बचपन

1.1.3 शिक्षा

1.1.4 नौकरी

1.1.5 विवाह एवं दांपत्य जीवन

1.1.6 मित्र

1.1.7 साहित्य में रूचि

1.2 व्यक्तित्व की विशेषताएँ

1.2.1 बाह्य और आंतरिक व्यक्तित्व

1.2.2 विभिन्न रचनाकारों से प्रभावित

1.2.3 मेधावी व्यक्तित्व

1.2.4 सहज निवेदन शैली

1.2.5 स्पष्टवादी लेखक

1.2.6 आशावादी

1.2.7 मार्क्सवादी विचारों से अनुप्रणित

1.2.8 जनवादी लेखक

1.3 संजीव की साहित्य-यात्रा अर्थात् कृतित्व

1.3.1 उपन्यास साहित्य

1.3.2 कहानी-संग्रह

1.3.3 नाटक साहित्य

1.3.4 पुरस्कार एवं सम्मान

1.4 डॉ. रवींद्र ठाकुर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.4.1 जन्मतिथि तथा जन्मस्थान

1.4.2 परिवार

1.4.3 शिक्षा

1.4.4 नौकरी

1.4.5 विवाह एवं दांपत्य जीवन

1.4.6 साहित्य में रूचि

1.5 व्यक्तित्व की विशेषताएँ

1.5.1 बाह्य और आंतरिक व्यक्तित्व

1.5.2 मेधावी व्यक्तित्व

1.5.3 सहज निवेदन शैली

1.5.4 स्पष्टवादी लेखक

1.5.5 पारदर्शक

1.5.6 जनवादी लेखक

1.6 डॉ.रवींद्र ठाकुर की साहित्य-यात्रा अर्थात् कृतित्व

1.6.1 उपन्यास साहित्य

1.6.2 कविता-संग्रह

1.6.3 अनूदित साहित्य

1.6.4 समीक्षा

1.6.5 किशोर उपन्यास

1.7 पुरस्कार एवं सम्मान

1.8 'संजीव' एवं 'रवींद्र ठाकुर' का व्यक्तित्व एवं कृतित्व : तुलनात्मक विवेचन

1.8.1 साम्य

1.8.2 वैषम्य

निष्कर्ष

KAR LIBRARY
KOLHAPUR

**द्‌वितीय अध्याय - 'सूत्रधार' तथा 'महात्मा' की विषयवस्तु : तुलनात्मक मूल्यांकन''** **18 - 43**

प्रास्ताविक

2.1 संजीव के 'सूत्रधार' का विषयगत विवेचन

2.2 रवींद्र ठाकुर के 'महात्मा' का विषयगत विवेचन

2.3 'सूत्रधार' एवं 'महात्मा' : तुलनात्मक मूल्यांकन

2.3.1 साम्य

2.3.2 वैषम्य

निष्कर्ष

**तृतीय अध्याय - ''विवेच्य उपन्यासों में प्रधान चरित्र : तुलनात्मक मूल्यांकन''** **44 - 70**

प्रास्ताविक

3.1 'सूत्रधार' के भिखारी ठाकुर

3.1.1 स्वाभिमानी व्यक्ति

3.1.2 लोकसंस्कृति, लोकपरंपराओं का समर्थक

3.1.3 सामाजिक परिवर्तन के साथ समता के लिए प्रयत्नशील

3.1.4 संवेदनशील कवि, लेखक

3.1.5 कर्तव्यनिष्ठ

3.1.6 प्रगतिशील विचारोंवाला

3.1.7 विविध कलाओं का ज्ञाता

3.1.8 आदर्श विचारों का समर्थक

3.2 'महात्मा' के महात्मा फुले

3.2.1 ध्येय से संप्रेरित व्यक्तित्व

3.2.2 स्वतंत्र विचारशक्ति

3.2.3 आदर्श विचारों का समर्थक

3.2.4 कार्यतत्परता

3.2.5 क्रांतिकारी व्यक्तित्व

3.2.6 संवेदनशील कवि, लेखक, व्यक्ति

3.2.7 प्रगतिशील विचारोंवाला

3.2.8 राष्ट्राभिमानी कुशल नेता

3.3 विवेच्य उपन्यासों के प्रधान चरित्र : तुलनात्मक मूल्यांकन

3.3.1 साम्य

3.3.2 वैषम्य

निष्कर्ष

**चतुर्थ अध्याय - ''विवेच्य उपन्यासों में चरित्र-चित्रण की प्रवृत्तियाँ : तुलनात्मक मूल्यांकन'' 71 - 107**

प्रास्ताविक

4.1 ऐतिहासिकता का निर्वाह

4.2 स्थल काल का निर्वाह

4.3 दोनों महात्मा के रूप में चित्रित

4.4 दोनों विचारवंत के रूप में चित्रित

4.5 दोनों अधिकार की लड़ाई लड़नेवाले

4.6 दोनों स्थापित व्यवस्था में परिवर्तन चाहनेवाले रूप में

4.7 दोनों कवि के रूप में अंकित

4.8 दोनों क्रांतिकारी रूप में प्रस्तुत

4.9 समन्वित तुलनात्मक मूल्यांकन

4.9.1 साम्य

4.9.2 वैषम्य

निष्कर्ष

**पंचम अध्याय - ''औपन्यासिक कला के आधार पर विवेच्य उपन्यासों का तुलनात्मक मूल्यांकन''** **108 - 136**

प्रास्ताविक

5.1 'सूत्रधार' एवं 'महात्मा' का कथाशिल्प : तुलनात्मक विचार

5.1.1 सूत्रधार : कथाशिल्प

5.1.2 महात्मा : कथाशिल्प

5.2 'सूत्रधार' एवं 'महात्मा' का चरित्र चित्रण शिल्प : तुलनात्मक विचार

5.2.1 सूत्रधार : पात्र तथा चरित्र चित्रण

5.2.2 भिखारी ठाकुर का चरित्र चित्रण

5.2.3 महात्मा : पात्र तथा चरित्र चित्रण

5.2.4 महात्मा जोतीराव फुले जी का चरित्र चित्रण

5.3 'सूत्रधार' एवं 'महात्मा' का संवाद शिल्प : तुलनात्मक विचार

5.3.1 'सूत्रधार' की संवाद योजना

5.3.1.1 पात्रानुकुल

5.3.1.2 स्वाभाविकता

5.3.1.3 हास्यव्यंग्यपूर्ण

5.3.1.4 रोचकता

5.3.2 'महात्मा' की संवाद शिल्प

5.3.2.1 संक्षिप्तता

5.3.2.2 रोचकता

5.4 'सूत्रधार' एवं 'महात्मा' का देशकाल वातावरण शिल्प : तुलनात्मक विचार

5.4.1 'सूत्रधार' में चित्रित देशकाल वातावरण

5.4.2 'महात्मा' में चित्रित देशकाल वातावरण

5.5 'सूत्रधार' एवं 'महात्मा' की भाषा शिल्प : तुलनात्मक विचार

5.5.1 'सूत्रधार' : भाषाशिल्प

5.5.1.1 संस्कृत शब्दों का प्रयोग

5.5.1.2 अरबी शब्दों का प्रयोग

5.5.1.3 फारसी शब्दों का प्रयोग

5.5.1.4 अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग

5.5.1.5 मुहावरों, कहावतों का प्रयोग

5.5.2 शैली : सूत्रधार

5.5.2.1 आत्मकथनात्मक शैली

5.5.2.2 पत्रात्मक शैली

5.5.2.3 प्रश्नात्मक शैली

5.5.2.4 वर्णनात्मक शैली

5.5.3 'महात्मा' : भाषा शिल्प

5.5.3.1 अरबी शब्दों का प्रयोग

5.5.3.2 फारसी शब्दों का प्रयोग

5.5.3.3 संस्कृत शब्दों का प्रयोग

5.5.3.4 अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग

5.5.4 शैली : महात्मा

5.5.4.1 प्रश्नात्मक शैली

5.5.4.2 वर्णनात्मक शैली

5.5.4.3 आत्मकथात्मक शैली

5.6 'सूत्रधार' एवं 'महात्मा' का उद्देश्य शिल्प : तुलनात्मक विचार

5.6.1 उद्देश्य : सूत्रधार

5.6.2 उद्देश्य : महात्मा

5.7 दोनों का तुलनात्मक मूल्यांकन

5.7.1 साम्य

5.7.2 वैषम्य

निष्कर्ष

**उपसंहार** **137-141**

**परिशिष्ट** **142-154**

**संदर्भ ग्रंथ-सूची** **155-158**

* * * *